कुंभ मेले की सामाजिक एवं शैक्षिक महत्ता

डा0 कंचन दूबे

असिस्टेंट प्रोफेसर,शिक्षाशास्त्र

कमला आर्य कन्या पी०जी०

कॉलेज, मिर्जापुर

सार–प्रस्तुत शोधलेख में कुंभ का महत्व पौराणिक एवं ऐतिहासिक साक्ष्यों के साथ प्रस्तुत करते हुए यह बताने का प्रयास है कि यह वैश्विक पटल पर हमारे संस्कृति की धरोहर है और हमारे ज्ञान परंपरा का चिर स्त्रोत भी। कुंभ मेला उपचार और आध्यात्मिक उन्नति का स्रोत है,क्योंकि जल भारतीय समाज का प्रमुख अंग है और उसे जीवन का अभिन्न अंग माना जाता है । पवित्र गंगा को एक पवित्र नदी और रक्त रेखा माना जाता है । भारत को अपने सभी नदी स्थलों पर तीर्थ स्थलों के विकास के लिए जाना जाता है भारत में धार्मिक अनुष्ठान समारोह त्योहार और यहां तक की अंतिम संस्कार भी इन पवित्र नदियों के आसपास किया जाता है । पवित्र नदियों में स्नान करना एक शुद्धिकरण अनुष्ठान माना जाता है यह नदियां धार्मिक प्रथाओं के साथ–साथ सांस्कृतिक जुड़ाव का स्रोत भी है।

कुंभ एक परिवर्तनकारी घटना का स्रोत है जहां स्थूल स्तर पर सौरमंडल और ब्रह्मांड और सूक्ष्म स्तर पर शरीर के पांच तत्वों (72% जल, 12% पृथ्वी,6%वायु,4%अग्नि तथा शेष आकाश) को शुद्ध एवं परिवर्तित करने की घटना है। जिसमें अधिकांश प्रभावकारी तत्व पानी ही है। कुंभ के अवसर पर अलग–अलग अक्षांशों पर अलग–अलग नदियों के सौर चक्र परिवर्तन पर मिलने से जल मंथन की स्थिति बनती है और उस विशेष समय में डुबकी लगाने से शरीर को 72% पानी प्राप्त करने में मदद मिलती है ।कुंभ के दिन जल निकायों की आंतरिक व बाह्य रूप से 48 घंटे की अवधि शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूप से सभी स्तरों पर परिवर्तन की स्थिति सुनिश्चित करती है। इसीलिए गरुड़ पुराण में इसे अरिष्टनोम् एवं वाजपेय यज्ञ से उच्च स्थान प्राप्त है **–अरिष्टोम सहस्राणि वाजपेय शतानि च। कुंभ स्नानस्य कलां नर्हंते षोडशीमपि।।**

मुख्य शब्द – कुंभ, किंवदंतियां, पौराणिक, सामाजिक, शैक्षिक।

प्रस्तावना–कुंभ मेले का अर्थ है अमृत्व का मेला । कुंभ का अर्थ अमृत कलश तथा मेला का अर्थ है सभा या मिलना ।कुंभ मेला ज्ञान ,तपस्या और भक्ति का त्यौहार है । इस त्यौहार में हर धर्म हर जाति के लोग किसी न किसी रूप में मौजूद होते हैं और इस मेले में विभिन्न प्रकार की भाषा ,परंपराएं, , संस्कृतियां, कपड़े, भोजन एवं रहन–सहन के तरीके देखे जा सकते हैं ।यह वह समागम है जहां आश्चर्यजनक रूप से लाखों लोग निरंतर बिना आमंत्रण के पहुंच जाते हैं।

कुंभ खड़े के लिए संस्कृत शब्द है जिसे कलश कहा जाता है यह भारतीय ज्योतिष में एक राशि भी है ,जिसमें बृहस्पति कुंभ राशि में तथा सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है ।इसके मुख्य आयोजक अखाड़े एवं आश्रम, धार्मिक संगठन, भिक्षा पर रहने वाले व्यक्ति होते हैं। यह उत्सव प्रयागराज हरिद्वार उज्जैन और नासिक में हर–चार साल में बारी–बारी से आयोजित किया जाता है इसलिए यह देश में केंद्रीय आध्यात्मिक भूमिका निभाता है ।यह आयोजन खगोल, विज्ञान, ज्योतिष,अध्यात्म ,अनुष्ठानिक परंपराओं और सामाजिक और सांस्कृतिक रीति रिवाज और प्रथाओं के विज्ञान को समाहित करता है, जो इसे ज्ञान में समृद्ध बनता है। परंपराओं से संबंधित ज्ञान , कौशल, प्राचीन धार्मिक पांडुलिपियों ,मौखिक परंपरा, ऐतिहासिक यात्रा वृतांतों और प्रख्यात इतिहासकारों द्वारा निर्मित ग्रन्थों का प्रचार प्रसार भी यह उत्सव संभव बनाता है ।

यह त्यौहार दुनिया की सबसे बड़ी शांतिपूर्ण सभा में से एक है और उसे धार्मिक तीर्थ यात्रियों की दुनिया की सबसे बड़ी मंडली माना जाता है इसे यूनेस्को की मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में अंकित किया गया है (12.कॉम–2017) ।

- कुंभ का अर्थ– कुंभ अमृत का कलश।
- कुंभ –अर्थात दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक सांस्कृतिक आयोजन।
- कुंभ–जन्म मरण के चरण से मुक्ति का मौका।
- कुंभ–कुंभ संसद है, कुंभ संवाद है यह मानवता का विराट अंतरराष्ट्रीय पर्व है कुंभ अनहद है नाद की भांति है ,ना कोई इसका आदि है ना अंत ।"सर्व सिद्धिप्रदः कुंभः।"

कुंभ में स्नान है, दान है ,राम है, श्याम है, और शिव है। कुंभ में सार है, संसार है, ऋषि है ,मुनी है तपस्या है ।कुंभ में कर्म है, धर्म है ,मर्म है ,अध्यात्म है। कुंभ में ज्ञान है, विज्ञान है ,संस्कार है ,व्यवहार है ,सेवा है।

कुंभ का पौराणिक वर्णन–धार्मिक विद्वानों का मानना है की कुंभ मेला उन जगहों पर आयोजित किया जाता है जहां स्कंद पुराण अनुसार भगवान विष्णु द्वारा समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कलश से अमृत की बूंदे गिरी थी ।कथा अनुसार अमृत की बूंदे हरिद्वार क्षिप्रा नदी तट पर ,नासिक गोदावरी नदी तट पर तथा हरिद्वार गंगा तट और प्रयागराज में भी गंगा यमुना और सरस्वती के तट पर यह बूंदे गिरी थी और इन स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है।

पद्म पुराण में उल्लेख है कि–पृथिव्याम कुंभयोगस्य चतुर्था भेद उच्चते। चतुःस्थले नितनात सुधा कुम्भस्थ भूतले।। चन्द्र प्रस्रवणा रक्षां सूर्यो विस्फोटनात दधौ। दैत्येभ्यश्च गुरु रक्षां सौरिदेवेन्द्रजात् भयात् ।।

आयोजन की मान्यता है कि सात हजार धनुष निरंतर मां गंगा की रक्षा करते हैं, इंद्र पूरे प्रयाग की रक्षा करते हैं,भगवान विष्णु भीतर के मंडल की रक्षा करते हैं एवं अक्षयवट की रक्षा शिवजी करते हैं।

वेदों में उल्लेख– "यत्र ब्रह्माविदो शान्ति दीक्षया तपसा सह।

"सूर्यो मा तंत्र नयतु चक्षुः सुयो दधातु में।।

सूर्याय स्वाहा।।(अथर्ववेद–१६.४३.)

"जघान वृत्रं स्वाधितिर्वनेव रुरोज पुरो अ्प्रपदन सिन्धून।

"विभेद गिरि नवमित्न कुम्भमा गा इन्द्रो अकृरुत सूयुग्भिः।। (ऋग्वेद–१०.८६.७)

ऐतिहासिक वर्णन–सातवीं शताब्दी के दौरान चीनी यात्री ह्वेनसांग नें सबसे पहले 644 ईस्वी में राजा हर्षवर्धन के शासनकाल में प्रयाग कुंभ मेले का वर्णन किया है। जिसमें इन्होंने बताया है कि एक पवित्र नगर है जहां सैकड़ो हिंदू और बौद्ध मंदिर विद्यमान है और यहां एक पवित्र नदी स्नान एवं पवित्र अनुष्ठानों का आयोजन होता है ,जो आत्मा की शुद्धि के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं ।इस मेले का उल्लेख बौद्ध ग्रंथ के मञ्झिमनिकाय में भी मिलता है। महाभारत में भी वन पर्व में प्रयाग के संगम में माघ मेला माघ मास के स्नान में सभी पापों की मुक्ति का उल्लेख है।

"त्रिपुरम दहते यज्ञ स्नानं तीर्थे तू दहते । सर्वपापं च तीर्थे स्नात्वा सर्वभवति शुद्धेय ।। (महाभारत वनपर्व)

इस त्यौहार का श्रेय प्रारंभिक रूप से आठवीं शताब्दी के हिंदू दार्शनिक और संत आदि शंकराचार्य को दिया जाता है जिन्होंने चारों दिशाओं में मठों तथा चर्चा सभाओं के आयोजनों की शुरुआत की थी। ऐतिहासिक पांडुलिपियों एवं शिलालेखों में भी माघ मेले का वर्णन 6 से 12 वर्षों के बीच की अवधि में बड़ी सभाओं के रूप में वर्णन मिलता है।कामा मैक्लीन के अनुसार भी –औपनिवेशिक युग के दौरान सामाजिक, राजनीतिक विकास और ओरिएंट लिस्ट में की प्रतिक्रियाओं ने प्राचीन माघ मेले को आधुनिक युग के कुंभ मेले के रूप में पुनः ब्रांडिंग और पूनः संगठित किया। (मैकलीन–2008 पृ0–91)।

कुंभ मेले का ब्रह्मांडीय घटनाक्रम– मान्यता है कि देवताओं का 12 दिन पृथ्वी पर 12 साल के बराबर होता है और दैत्य एवं देवों का अमृत कलश का युद्ध 12 दिन चला इसलिए ऐसा माना जाता है कि इन दिनों देवताओं का पृथ्वी पर आगमन होता है। कुंभ आयोजन में नवग्रहों में से सूर्य चंद्रमा शनि तथा गुरु ग्रह की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है क्योंकि अमृत कलश के लिए चल रहे युद्ध में कलश की खींचा–तानी में चंद्रमा ने कलश को फूटने से बचाया , शनि ने इंद्र के प्रकोप से रक्षा की, गुरु ने कलश को छुपाया, सूर्य ने कलश को फूटने से बचाया था, इसलिए जब इन ग्रहों का योग एवं मिलन संयोग एक राशि में होता है तो कुंभ का आयोजन होता है।

कुंभ आयोजन में राशियों का संयोजन –

- कुंभ स्थान–त्रयंबकेश्वर(नासिक)–गोदावरी नदी –जब वृहस्पति और सूर्य सिंह राशि में प्रवेश करतें हैं–मास–भाद्रपद(अगस्त –सितंबर)।
- कुंभ स्थान–हरिद्वार –गंगा नदी –जब वृहस्पति कुंभ राशि में और सूर्य मेष राशि में हो –मास–चौत्र(मार्च –अप्रैल)।
- कुंभ स्थान –उज्जैन –क्षिप्रा नदी –जब वृहस्पति सिंह राशि में और सूर्य मेष राशि में होता है –मास–बैशाख (अप्रैल –मई)।
- कुंभ स्थान– प्रयागराज –गंगा, यमुना, सरस्वती नदी का संगम –जब वृहस्पति वृषभ राशि में और सूर्य मकर राशि में होता है–मास–माघ(जनवरी –फरवरी)।

कुंभ मेलों के प्रकार–

१–महाकुंभ मेला–यह केवल प्रयागराज में आयोजित होता है यह प्रत्येक 144 वर्षों में या 12 पूर्ण कुंभ के बाद आता है।

२–पूर्ण कुंभ मेला–यह हर 12 साल में आता है जो चार स्थान प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक एवं उज्जैन में बारी–बारी से आता है।

३–अर्ध कुंभ मेला–भारत में हर 6 साल में केवल दो स्थान हरिद्वार एवं प्रयागराज में होता है।

४–कुंभ मेला–चारों स्थान पर राज्य सरकारों द्वारा हर 3 साल में आयोजित होता है।

५–माघ कुंभ मेला–इसे मिनी कुंभ कहा जाता है जो प्रतिवर्ष केवल प्रयागराज में लगता है या हिंदू कैलेंडर के अनुसार माघ महीने में लगता है।

कुंभ मेले का सामाजिक महत्व–कुंभ मेले को व्यापक रूप से दुनिया की सबसे बड़ी धार्मिक सभा के रूप में माना जाता है (जेम्स लोचटे फील्ड)। ''समन्वयक और उपस्थित लोग स्वयं कहते हैं की कुंभ उत्सव की महिमा का एक हिस्सा भाईचारे और प्रेम की भावना में है'' (कामा मैक्लीन) ।

कुंभ मेला सामूहिक ऊर्जा और सामाजिक बंधनों को मजबूत करती है और व्यक्तिगत तथा सांप्रदायिक चेतन को बढ़ाती है। जहां लाखों लोग सद्भाव और साझा विरासत की भावना के साथ नदी के तट पर शांतिपूर्वक इकट्ठा होते हैं। आधुनिक धार्मिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धांत में कुंभ मेला एलीम दुर्खीम की "सामूहिक उत्साह की अवधारणा" का उदाहरण है यह घटना तब होती है जब व्यक्ति सभा अनुष्ठानों में इकट्ठा होते हैं और जिसमें एकता और अपनेपन की गहरी भावना को बढ़ावा मिलता है।

ऐतिहासिक रूप से कुंभ मेले वाणिज्यिक आयोजन होते है । अभिलेखागार के दस्तावेजों से पता चलता है कि 1882 में भारत सरकार ने कुंभ पर 20,288 रुपए खर्च किए और कुंभ से सरकार को 29,612 रुपए के लाभ के साथ 49,840 रुपए की आमदनी हुई। कुंभ मेले की इसी व्यावसायिक विशेषता के कारण यह ब्रिटिश सरकार के भी व्यवसाय का केंद्र बना और वायसरायों नें इसके प्रशासन एवं प्रबंधन की जिम्मेदारी भी ले ली थी।

यह मेला 1947 की स्वतंत्रता आंदोलन का केंद्र भी रहा क्योंकि यह एक ऐसा स्थान था जहां स्थानीय लोग और राजनेता बड़ी संख्या में एकत्र होते थे। इसी मेले में 1906 में सनातन धर्म सभा ने मुलाकात की और मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय बनाने का संकल्प लिया। 1964 में हरिद्वार कुंभ मेले में विश्व हिंदू परिषद की स्थापना की गई। "यह आयोजन न केवल एक धार्मिक सभा के रूप में बल्कि एक उत्सव के रूप में व्यापार और सामाजिक संचार का मिश्रण, मनोरंजन को साझा करने वाला निष्पक्षता के तत्व से समाहित रहता है (मेहता वेरा मेहता एवं मेहता– 2015)।

इस कुंभ मेले में तीर्थ यात्रा की दोनों विशेषताएं सम्मिलित है एक तो यह एक ऐतिहासिक एवं पवित्र स्थल की वास्तविक यात्रा है दूसरे इसमें आत्म निरीक्षण, चिंतन और ध्यान शामिल है(कजिनों–2012) ।

इस पवित्र आयोजन में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों तीर्थ यात्रियों की भागीदारी, मंदिर की परिक्रमा, कथा, साष्टांग प्रणाम करना और प्रार्थना करना माइंडफूलनेस की प्रथाओं के लिए एक तर्क के रूप में कार्य करता है। इस यात्रा में साक्षी चेतना और ब्रह्मांड के बारे में जागरूकता की पुष्टि का मार्ग है। साक्षी चेतना स्पष्टता की भावना लाती है तनाव बोझ दर्द और कठिनाइयों को दूर करने का कार्य करती है और खुले दिमाग से अवलोकन और सत्य सावधानी से जुड़ी होती है ।(कॉर्न फील्ड, 2011 तामशिरो 2018)।

कुंभ मेले का शैक्षिक महत्व–

1–तीर्थ यात्रा अपने मौखिक इतिहास और स्व–नृवंश विज्ञान विवरणों के माध्यम से अस्तित्व संबंधी अंतः दृष्टि और विश्व दृष्टिकोण प्रतिमान बदलाव को प्रकट करता है जो शांति अध्ययन में शिक्षकों व शोधकर्ताओं के लिए मूल्यवान हो सकता है।

2–धार्मिक शिक्षा, इतिहास, जीवनी ,दर्शन ,मनोविज्ञान और चेतना अध्ययन के लिए यहां के सांस्कृतिक कार्यक्रम उक्त अनुशासन के प्रसार में योगदान देते हैं।

3–राष्ट्रवाद की भावना बढ़ाने के लिए यह एक सूचना तंत्र के रूप में कार्य करता है।

4–धार्मिक प्रकाशन, प्रार्थना पुस्तकें ,मेला गाइड बुक और मैनुअल कुंभ ऐतिहासिकता प्रतिपूरक के साथ सूचना स्रोत एवं पारंपरिक साक्ष्य को चुनौती देते हैं।

5–इतिहास लेखन में तो यहां संपन्न होने वाली क्रियाओं,एजेंसियों और देवी देवताओं का दावा किया गया है।(मैक्लीन –2008)।

6–गुरु शिष्य परंपरा हमें अखाड़े एवं सन्यासियों के वंश परंपरा में खासतौर से देखने को मिलती है ।(सेंगर– 2019)। अखाड़े में शिष्यों को जीवन के दो पहलुओं शांति एवं युद्ध कौशल से संबंधित शिक्षा दी जाती है।

7–अनुशासन तो मेले की रीढ़ होती है क्योंकि यदि अनुशासन ना हो तो एक मेला क्षेत्र में विभिन्न भाषा,संस्कृति,वेशभूषा के लोग 40 करोड़ की जनसंख्या में एक निश्चित भूभाग में समा ही नहीं सकते।

8–शिक्षण के लिए यहां चिंतन मनन निदिध्यासन के साथ ही साथ व्याख्यान ,वार्ता, प्रदर्शन कला, नाटकीय प्रदर्शन ,मॉडल निर्माण, कलाकृति प्रदर्शन,झांकियां के द्वारा प्रदर्शन आदि का भरपूर उपयोग देखने को मिलता है अर्थात मल्टीमीडिया प्रदर्शन का जीवंत उदाहरण है यह मेला। यह यात्रा

अंतर्दृष्टि,अनुभव, चेतना,सामाजिक उपचार,संपूर्णता,ग्रहणशीलता जैसे मनोवैज्ञानिक विधियों के विकास में मदद करती है।

9–शिक्षण विषयों के रूप में देखें तो लौकिक एवं पारलौकिक विषयों जैसे वेद, पुराण, गीता, दर्शन आदि का व्याख्यान सुनने को मिलता है इसके अलावा इतिहास,भाषा, व्यापार ,प्रौद्योगिकी ,कला ,काव्य का भी भरपूर संयोजन इस मेले में देखने को मिलता है।

10–शैक्षिक उद्देश्यों की दृष्टि से यह मेला "बायोसाइकोसोशियोस्रिचुअल"कहा जाता है,जिसमें भौतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आयामों को शामिल करना और व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक निकायों में समस्याओं के लिए ये स्थल मेल– मिलाप और शांति सूजन के रूप में कार्य करते हैं।

11–भावनात्मक स्तर पर आघात अनिर्णय,भ्रमितअवस्था,संज्ञानात्मक असंगति और अस्तित्व संकट एक मनो सामाजिक प्राणी में मौजूद है। इस मेले के द्वारा माइंडफूलनेस आत्म जागरूकता और आध्यात्मिकता के प्रथम चरण जागृति एवं चेतना के विकास के लिए परिवर्तनकारी शिक्षण सिद्धांतों जैसे मनोसामाजिक मॉडल(मंजिरो – 1991 – 2009)और कट्टरपंथी क्षमा (टिपिंग– 2002)समूह के रचनात्मक चक्र की व्याख्या,सामूहिक पीड़ा,अमानवीयता को जानना आदि के द्वारा यह यात्रा एक परिवर्तनकारी समर्थन करती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1–आत्मश्रद्धा(2010 बी०जुलाई) "विश्व का सबसे बड़ा आस्था का कार्य; झलकिया," हरिद्वार कुंभ मेला –2010,वेदांत केसरी, पृष्ठ–218–226।

2–कॉर्नफील्ड जे०(2011) "कुंभ मेला ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि''https://shodhganga.

3–दिव्या बी०, और केशव मूर्ति "तीर्थ स्थल के रूप में कुंभ मेले की समीक्षा अध्ययन "योगमीमांसा खंड –52 संख्या–2 (जुलाई दिसंबर 2020) पृष्ठ –88।

4–मैक्लीन के०(2008)"तीर्थ यात्रा और शक्तिय इलाहाबाद के कुंभ मेला 1765–1954 यूएसएय ओयूपी ISBN 978–0–9– 533894–2।

5–https://hi.wikipedia.org।

6–एडमिन मनीष 2021–26 कुंभ मेला इतिहास महत्व और आयोजन अभिगमन तिथि 2021–01–29 ।

7– "कुंभ मेला के पीछे यह है ज्योतिषी और पौराणिक कारण " जागरण ब्लॉग;अभिगमन तिथि 2021–12–12।

8–नारायण बी०, नारायण के०, और बर्चेट सीएन०(2010)"कुंभ मेला और साधुः–अमरता की खोज; पिलग्रिम्स पब्लिशिंगः वाराणसी,भारत।